

श्रापस्तम्ब m. N. pr. gaṇa विद्दि (श्रापस्तम्ब patron.) zu P. 4, 1, 104. ein vielgenannter Lehrer und Schriftsteller über Ritual JĀGŪ. 1, 4. COLEBR. Misc. Ess. I, 17. 118. 144. 200. 314. WEBER, Lit. 83 — 89. 96—98. Verz. d. B. H. 62. No. 759. Ind. St. 1, 18. 19. 20. 75. 80. u. s. w. Davon adj. श्रापस्तम्बी COLEBR. Misc. Ess. I, 17. श्रापस्तम्बे (!) Verz. d. B. H. No. 143. Ind. St. 2, 16. श्रापस्तम्बी f. 1, 80.

श्रापस्तम्बि patron. von श्रापस्तम्ब Verz. d. B. H. 54, 7 v. u.

श्रापस्तम्बिनी f. N. einer Pflanze (लिङ्गिनीलता, im Hindi: पञ्चगुरि-या) RĀGĀN. im ÇKDR. Vielleicht *Eriocaulon quinquangulare* Lin. (beng. गुरी).

श्रापाक (von पच् mit श्रा) m. Backofen WILS. Töpferofen ĠAṬĀDH. im ÇKDR. श्रापाकदान Verz. d. B. H. 136 (158).

श्रापाकेस्यै (श्रा + स्य) adj. im Ofen steckend AV. 8, 6, 14.

श्रापाङ्ग (von श्रापाङ्ग) n. das Behandeln der Augenwinkel (mit Salbe) Suçr. 2, 333, 14.

श्रापात्रिभृ m. N. pr. eines Mannes Verz. d. B. H. No. 810.

श्रापात (von पत् mit श्रा) 1) adj. auf Etwas losstürzend, sich an Etwas machend: मघापातो विषास्वादः M. 11, 9. KULL.: = मधुरोपक्रमः. — 2) m. das Heranstürzen, Andrang: तीव्रापातः ÇĀK. 32, v. l. दंष्ट्रा: — श्रापात-डुःसहः Hip. 2, 9. गृहपातः RAGH. 12, 76. तदापातः KUMĀRAS. 2, 45. KATHĀS. 22, 202. जलापातः 19, 50. अश्वविद्युदापातः 23, 112. कामशरापातः 4, 8. धारापातैः MECH. 49. das Hineinstürzen: अन्तलापातः in's Feuer JĀGŪ. 3, 154. तेषां रणापातेन ARG. 7, 10. = अंशः TRIK. 3, 3, 149. = पतनः H. an. 3, 243. MED. t. 87. — 3) m. das Sicheinstellen, Sichereignen, zum-Vorschein-Kommen: श्रान्त्यव्यभिचारोपापातात् SĀH. D. 10, 19. — 4) श्रापाततस्मू beim ersten Ansatz, sofort, ohne Weiteres: बहिर्विषयप्रवणानामपाततः पुरुषार्थे प्रवेशो न संभवति MADHUS. in Ind. St. 1, 23, 3 v. u. विधिवद्घो-तवद्देवाङ्गत्वेनापाततो ऽधिगताखिलवेदार्थः VERĀNTAS. 1, 10. Comm. 13, 13. 23, 2 v. u. 26, 3 v. u. Sch. in der Einl. zu NĀJA-S. 4, 71. SĀH. D. (1828) 273, 3. 8. = तदात्र TRIK. 3, 3, 149. MED. t. 87. = कालः H. an. 3, 243. — 5) m. das zum-Sturz-Bringen ÇĀBDAK. im ÇKDR.

श्रापातिन् (wie eben) adj. sich ereignend: श्रामुत्पाति कल्याणं कार्य-मिदं हि शंसति KATHĀS. 18, 49. अन्तरापाति हि श्रेयः कार्यसंपत्तिमूचकम् 23, 71.

श्रापात्य part. fut. pass. (कर्तरि und भावकर्माणोः) von पत् mit श्रा P. 3, 4, 68.

श्रापाद् (von पद् mit श्रा) m. Lohn, Belohnung: ध्यानापादोऽशा इव KHĀND. Up. 7, 6, 1. ÇĀKĀK.: ध्यानस्यापादानमापादो ध्यानफललाभः.

श्रापादन (von पद् im caus. mit श्रा) n. das Gelangenlassen, Hinführen: इन्द्रस्य संख्यात्तरापादने गम्यमाने P. 5, 3, 43, Sch.

श्रापान (von पा, पिबति mit श्रा) n. Gelage MBH. 1, 620. 623. गन्धर्वा-प्सरसो भद्रे मामापानगतं सदा । उपातिष्ठति 3, 16178. Trinkstube, Trink-haus AK. 2, 10, 43. H. 907. श्रापानभूमि R. 1, 3, 28. RAGH. 4, 42. KUMĀRAS. 6, 42. श्रापानशाला R. 5, 13, 8.

श्रापात्तमन्यु (2. श्रा - पात्त + मन्) adj. dessen Trunk Eifer erregt, Muth macht: der Soma RV. 10, 89, 5. Nir. 3, 12.

श्रापायिन् (von पा, पिबति mit श्रा) adj. trinklustig AIT. BR. 7, 29.

श्रापालि m. Laus ĠAṬĀDH. im ÇKDR.

1. श्रापि (von श्राप) m. Verbündeter, Befreundeter, Bekannter: श्रापिः पिता प्रमतिः सोम्यानाम् RV. 1, 31, 16. 26. 3. 110, 2. कृपे देवा यूयमिदायं स्व 2, 29, 4. 27, 17. 34, 10. 38, 11. अतृप्यै मरुत श्रापिर्षः 3, 31, 9. 6. नासु-धैरापिर्न सखा न जामिः 4, 23, 6. इन्द्रा कृ पो वरुणा चक्र श्रापी देवो मर्तः सुख्याय प्रयस्वान् 41, 2. 3, 13. 5, 53, 2. 6, 45, 17. 7, 88, 6. 10, 7, 3. 83, 6. 106, 4. 117, 6. VS. 9, 20. — Vgl. श्रनापि, सुश्रापि, स्वापि und श्रात् 7. u. श्राप्.

2. श्रापि von प्या, प्यायते mit श्रा; s. वातापि.

श्रापिञ्जर (2. श्रा + पि) 1) adj. f. श्रा röhlich RAGH. 16, 51. — 2) n. Gold RĀGĀN. im ÇKDR.

श्रापित्वै (von 1. श्रापि) n. Bundesgenossenschaft, Freundschaft: श्रापित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गच्छे RV. 8, 4, 3. सदा हि वं श्रापित्वमस्ति निधुवि 20, 22.

श्रापिशल 1) adj. von Āpiçali herrührend: शास्त्रम् P. 6, 2, 36, Sch. — 2) m. ein Schüler Āpiçali's ebend. KĀç. zu 7, 3, 95.

श्रापिशलि m. patron. von श्रापिशल, Name eines alten Grammatikers P. 6, 1, 92. f. श्रापिणां gaṇa क्रौड्यादि zu P. 4, 1, 80.

श्रापिशाया patron. von श्रापिश (?). Verz. d. B. H. 35, 5.

श्रापी f. die 20ste Mondstund H. 113. श्रापी, nom. श्रापीस्, von प्या mit श्रा Vop. 26, 73.

श्रापीड (von पीड mit श्रा) 1) m. a) das Zusammendrücken: गलाः सुçr. 2, 201, 21. — b) ein auf dem Scheitel getragener Kranz AK. 2, 6, 3, 38. 3, 4, 238. H. 654. MBH. 3, 12234. वद्धापीड 1, 7314. विचित्रकुसुमा-पीडाः R. 2, 48, 11. कुर्वन्त कुसुमापीडान् शिरस्सु 93, 12. कृपैः काञ्चनापीडैः 6, 18, 2. 19, 9. 86, 9. अयमगमः (अशोकः) श्रीमानस्मिन्वनात्तरे । श्रापीडै-र्वङ्गभिर्भाति श्रीमान्पर्वतराडिव || N. 12, 76. तस्मिन्कुलापीडनिभे RAGH. 18, 28. Häufig am Ende von Personennamen, so z. B. in श्रितापीड, अन्-द्राः. — 2) f. श्रापीड N. eines Metrums COLEBR. Misc. Ess. II, 165.

1. श्रापीडित part. praet. pass. von पीड mit श्रा (s. d.).

2. श्रापीडित (von श्रापीड) adj. mit Kränzen geschmückt: पल्लवापी-डित (अशोक) N. (Bopp) 12, 102; vgl. 103.

श्रापीत (2. श्रा + पीत) 1) adj. gelblich. — 2) n. ein schwefelhaltiges Mineral (मार्त्तिकधातु) RĀGĀN. im ÇKDR.

श्रापीन (von प्या, प्यायते mit श्रा) 1) adj. s. u. प्या. — 2) n. Euter AK. 2, 9, 73. H. 1272. RAGH. 2, 18.

श्रापीनवन् (von श्रापीन) adj. das Zeitwort प्या mit श्रा (in irgend einer Form) enthaltend: शक्रु AIT. BR. 1, 17. Ebenso श्राप्यानवन् ÇĀT. BU. 7, 3, 4, 12. 45. 2, 1.

1. श्रापूपिकै (von श्रापूप) 1) adj. sich mit dem Verkauf von Kuchen ab-gebend P. 4, 4, 51, Sch. AK. 2, 9, 28. gewohnt Kuchen zu essen P. 4, 4, 61, Sch. ein Verehrer von Kuchen 4, 3, 96, Sch. dem es zuträglich ist Kuchen zu essen 4, 4, 63, Sch. — 2) n. ein Haufen Kuchen P. 4, 2, 47, Sch. 39, Vārt. 3, Sch. AK. 3, 3, 40. H. 1418.

2. श्रापूपिक (wie eben) adj. in Kuchen gut (श्रापूपे साधुः) gaṇa गुडादि zu P. 4, 4, 103.

श्रापूप्य (wie eben) m. Mehl TRIK. 2, 9, 15.

श्रापूपित s. u. पूय mit श्रा.

श्रापूर (von पूर [पृ] mit श्रा) adj. sich fillend: कृष्यभारपूरपीडनेत्कु-लया दशा KATHĀS. 23, 71.